ओ३म्

सत्यार्थप्रकाशकोषः

सुजाननगर (ज़ि० मुरादाबाद) निवासी

शेरसिंहविरचितः

सर्वार्य्यसज्जनानां सुबोधाय मुरादाबादनगरे

आर्य्यमित्रनाम्नि यन्त्रालये

पण्डित रामनारायणशर्म्मप्रबन्धेन मुद्रापयित्वा
प्रकाशितश्च ।

अस्याधिकारो ग्रंथकर्त्रा स्वायत्तीकृतः

अगस्त १९०१ ई०

कवित्त

झुंड के झुंड भरतखंड पर पखंड के दशा घोर अन्धकार वर-
षत सकुचात हैं ॥ धर्म्म रूप रथ पर चढ़ि आये ऋषिदया-
नन्द विजय की पताका हाथ जिन के फरात हैं ॥ खड्ग
न्याय युक्ती को ढार हाथ श्रुति जाके देख २ पोपन के हिया
थर थरात हैं ॥ सगरो दल बन्धन को खंडन कर डारो है
मानो अब उलूकन को रवि जू बिलगात हैं ॥ भनत मित्र शेर
सिंह जो न होत दयानन्द होत जो दशा तुम्हार कहन की
न बात हैं ॥ १ ॥

प्रथमावृत्ति १०००

[मूल्य

॥ भूमिका ॥

आजकल ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने और समझ ने की लोगों में प्रबल उत्कण्ठा उत्पन्न होरही है परन्तु साथही इसके कईएक रुकावटें भी सामने आती हैं अर्थात् सर्वसाधारण पुरुषों के-विद्या विहीन होने से और देशमें अत्यन्त पाखण्डफैलाजा से मातृभाषा की प्रतिष्ठा सर्वथाही जातीरही थी लोग संस्कृत विद्याके महत्वको भूलक अंगरेज़ीफ़ार्सीउर्दू आदि भाषाओंकी उन्नतिकी दौड़में आगेको बेसूदबढ़चले जारहे थे, यद्यपि ऋषि के अमृत मय उपदेशकी मधुर ध्वनि ने उनके चित्तको इसओर आकर्षित किया तथापि संस्कृतसे अनभिज्ञ भाषाकेजाननेवाले सर्वधारण पुरुषोंके लिये सत्यार्थ प्रकाशस्थ संस्कृत के कठिन शब्दों का ज्ञान नहोने से यथार्थ अर्थ का प्रकाश नहींहो और यहसत्यार्थप्रकाश सम्बन्धि आशयोंके समझने में बड़ीभारी रुकावट का सामना है क्योंकि जबतक शब्दोंका ठीक २ परिज्ञान नहो निःसन्देह सत्यार्थका बोध नहीं जब इन सबबातों पर विचार पूर्वक ध्यान दियाजाता हैतो सत्यार्थप्रकाश के एक ऐसेव की आवश्यक्ता (ज़रूरत) प्रतीत होती है जिसके द्वारा सत्यार्थप्रकाश में आये संस्कृत शब्दों का अर्थ बोध कराया जावे हमने इसकी आवश्यक्ता को विचार कईएव. प्रतिष्ठित आर्य्य सज्जनों के अनुमोदन करनेपर यहकोष तैयार किया है मुझे पूरणआ है कि इस कोषके सहारे से सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने पढ़ाने तथा समझने समझाने तक की एक बड़ी मंजिल कट जावेगी मूल्य भी प्रति पुस्तक =) ही रक्खागया है ॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना-
तथ्रामह
शेरसिंह अध्यापक पाठशाला
प्र कनखल ज़िला सहारनपुर

ओ३म्

ओ३म् नमः परमात्मने सच्चिदानन्दाय ।

अथ सत्यार्थप्रकाश कोषभूमिका प्रारभ्यते

शब्द अर्थ

कारण-सबब ।

विशेष-जियादह ।

-[illegible]ज्ञान-समझ ।

[illegible]करणानुसार-ग्रैमरके मुताबिक ।

शब्द-वक्यरचना का भेद-शब्द तीन प्रकारका है वाचक, लाक्षणिक और व्यञ्जक यथा 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्रव्यञ्जकस्त्रिधा' ॥ १ ॥ मम्मटभट्ट ॥ अबवाचकादिकों के स्वरूपको क्रम से कहते है। "साक्षा[illegible]भिधत्तेसवाचकः" २ मम्मटः । अर्थात्[illegible] साक्षात् सङ्केत वाले अर्थ को कह[illegible]वाला शब्द वाचक होता है ॥

जैसे [illegible] कहने से (गल कम्बलादि मज्जीव विशेषरुपं) जिसके गले में चर्म लटकता है ऐसे गले कम्बल वाले जीवका बोध होता है ॥ मुख्यार्थ वाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते ॥ ३ ॥

मुख्य अर्थ के असम्भव होने से जिसकर[illegible] तदनुकूल अर्थ प्रतीत हो उस को ला[illegible]णिक कहते हैं यथा "गंगायाम् घोषः" गंगामें घोष । अहीर की झूंपड़ी है यहां गंगा के प्रवाह विशेष में झूंपड़ी का होना असम्भव है इस वास्ते गंगाके प्रवाह को छोड़कर गंगा शब्द की तीर में लक्षणा की गई इस को लाक्षणिक शब्द कहते हैं ॥

शब्द अर्थ

अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते । एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना साभिधा श्रिया ॥४॥ विश्वनाथः ॥ अनेक अर्थों में एक अर्थको निश्चय करने वाला शब्द व्यञ्जक होताहै । यथा "फणहीनो नागः) फणसे रहित नाग है । नाग शब्दके दो अर्थ हैं, १-हाथी और २-सर्प फण शब्द के योग से यहां नाग का अर्थ हाथी छोड़कर सर्प इसकारण से लिया गयाहै की हाथीके फण नही होता ॥

उचित-मुनासिब ।

परिपाटी-परम्परा ।

प्रत्युत-लेकिन, मगर but

पूर्वार्द्ध-पहिला अर्द्धभाग ।

उत्तरार्द्ध-पिछला अर्द्धभाग ।

पश्चात्-पीछे ।

स्वसिद्धान्त-अपना माना हुआ ।

सिद्धान्त-वाद प्रतिवाद पूर्वक जो निश्चय हो वह सिद्धान्त है ॥

व्याख्या-वयान ।

वेदविहित-वेद की कही हुई ।

प्रतिपादन-सबूत किया हुवा ।

आप्त-सत्पुरुष ।

उन्नति-चढ़ना ।

उपकार-लाभ ।

शब्द — अर्थ

शङ्का-सन्देह ।
सङ्गृहीत-ग्रहण किया हुआ
प्रत्येकमत-हरएक मज़हब ।
परस्पर-आपस में ।
पूर्णहित-पूरीखैर ख्वाही ।
स्वार्थी-मतलबी ।
विघ्न-नुक़सान ।
श्रोता-सुननेवाला ।
पाठक-पढ़नेवाला ।
अभिप्राय-मतलब ।
याथातथ्य-हूबहू ।
पर हानि-दूसरे का हर्ज ।
मन्तव्य-मानने योग्य ।
त्यक्तव्य-त्यागने योग्य ।
क्षीणाऽस्त-अभावसा है कुछ प्रसिद्ध और मशहूर नहीं है ।
अनीश्वर वादी-जो ईश्वरको नहीं मानते ।
चेष्टा-इरादह
अवश्य-ज़रूर
संक्षेप-थोड़ा Short ।
अनर्थ-खराबी ।

शब्द — अर्थ

पुनरुक्त दोष-एक वाक्य या आशय को बारश्कहना इसकोपुनरुक्तदोषकहतेहैं।
अप्रमाण-नाकाबिल सबूत ॥
अग्राह्य-ग्रहण करने के अयोग्य ।
संवाद-अच्छी वार्त्ता
असम्भव-जो न हो सके ।
विरुद्ध-उलटा ।
विदित-मालूम ।
वाक्य-जिनका परस्पर अर्थ मिलता हो ऐसेपदों का समूह वाक्य कहलाता है यथा-"जननीसुताननं सस्नेहंमीक्षते" माता पुत्र को स्नेन पूर्वक देखती है ।
अर्थ बोध-अर्थ का जानना ।
आग्रह-हठ करना, बेजा तरफ़दारी ।
प्रयत्न-कोशिश
प्रकाशित-ज़ाहिर ।
निर्णय-निश्चय ' तहक़ीक़ ।
आशय-मतलब ।
चिरस्थायी-बहुत दिनोंतक रहनेवाला ।
इतिशेरसिंहविरचिते[illegible]स्वामि दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे भूमिका समाप्तः ॥

अथ सत्यार्थप्रकाश कोषे[illegible]थमः समुल्लासः प्रारभ्यते।

शब्द — अर्थ

सर्वोत्तम-सब से अच्छा ।
समुदाय-समूह, झुण्ड ।
वाचक-पढ़नेवाला ।
ग्राहक-ग्रहण करनेवाला ।
प्रकरणानुकूल-प्रसङ्ग के अनुसार।
प्रसिद्ध-मशहूर ।
अप्रसिद्ध-जो मशहूर नहीं ।
उपस्थित-मौजूद ।
अनुपस्थित-ना मौजूद
युक्ति-दलील

शब्द — अर्थ

श्रम-मिहनत ।
आवश्यक-ज़रूरी ।
अनर्थक-जिसका अर्थ न हो, बेमाना ।
गौणिक-वस्फ़ी ।
स्वाभाविक-ज़ाती ।
सार्थक-ठीक अर्थ वाला ।
प्रधान-मुख्य ।
निज-अपना ।
सूक्ष्म-बारीक ।
समाधिस्थ-समाधि में स्थित बुद्धि

शब्द	अर्थ
विशेषण	तारीफ़ ।
नियम	दस्तूर, ज़ाब्ता ।
लौकिक पदार्थ	लोकप्रसिद्ध पदार्थ
विराट्	परमात्मा का नाम है जो चराचर जगत् को प्रकाश करता है ।
आधार	सहारा ।
निर्भ्रान्त	सन्देह रहित ।
पूर्वज	पहिले पैदाहुए ।
महाशय	विद्वान् ।
निकृष्ट	कमीना ।
साधारण	सामान्य, मामूली ।
उदासीन	वैराग्यवान् ।
मुख्यार्थ	असली अर्थ ।
संज्ञक	नामवाला ।
आत्मयोगी	वहलोग जो आत्मा का ध्यान करें ।
अखिल आश्रय युक्त	पूरी ताकत वाला चर' जो चलसक्ते हैं जैसे मनुष्य पशु अचर" जो नहीं चलसक्ते जैसे पाषाण वृक्षादि ।
अविरोध	विरोध रहित ।
मित्र	दोस्त ।
प्रत्यक्ष	आंख के सामने ।
घृणा	ग्लानि ।
आध्यात्मिक	आत्मा और शरीरमें अविद्या राग द्वेष मूर्खता ज्वरादि पीड़ाका होना,
आधिभौतिक	यह दुःख जो शत्रु व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त हो ।
आधिदैविक	जो अधिक वर्षा अधिक शरदी अधिक गर्मी मन और इन्द्रियों की चञ्चलता से दुःख प्राप्त हो उसको आधिदैविक कहते हैं ।
करुणा	कृपा, दया ।
साधन	वसीलह ' जरिया ।
सहोदर	सगा भाई एक माताकी सन्तान
अयन	घर ।
परमाणु	जिसके टुकड़े न हो सकें ।
सजातीय	अपनी जातिवाला ।
विजातीय	भिन्न जाति वाला ।
अवयव	हिस्सह ।
अंग	जोड़ ।
बिन्दुवत्	बून्द की तरह ।
असंख्य	बेशुमार ।
गुण	तारीफ़,
कर्म	काम,
स्वभाव	जोगुण एकही पदार्थ में पाया जावे जैसे अग्नि का स्वाभाविक गुण जलाना है ॥
मङ्गला चरण	स्तुति ।
आधुनिक ग्रन्थ	आजकल के पुस्तक
आर्ष ग्रन्थ	ऋषिकृत
किञ्चित्	थोड़ा

इतिशेरसिंहविरचितेश्रीमद्यतिवरस्वामि दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे प्रथमः समुल्लासःसमाप्तः ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे द्वितीयः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द	अर्थ
सुशीलता	अच्छा स्वभाव
मादक द्रव्य	नशा करने वाले बुद्धि नाशक पदार्थ ॥
दुर्गन्ध	बदबू
सभ्यत	चतुराई, लियाकत
रज़स	हैज़का खून

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
समागम करना, मिलना भोग करना	पुरश्चरण-अनुष्ठान
पुनः-फिर	ज्योतिर्विद्-ज्योतिष् का जानने वाला
पूर्वोक्त-ऊपर कहाहुआ	चैतन्य-जानदार
भोजन-खाना	प्रस्ताव-बयान
छादन-वस्त्र	अनुमान-कयास
सावधानी-बचाव	धूर्त्त-ठग
क्रमशः-धीरे २	प्रमेह-धातुक्षीणता का रोग
प्रसूता-ज़च्चह	उत्साह-चाव
दर्शनीय पदार्थ-सुन्दर पदार्थ	साहस-अकेला डटारहना, हिम्मत
प्रसव समय-जन्म समय	अमूल्य-बेमोल
स्तन-छाती	उक्त वचन-कहा हुआ
छिद्र-सूराख़	सुशिक्षित-भले प्रकार सीखाहुआ
स्रवत-ज़ारी	ताड़न-भलाबुरा कहना ॥
पुनरपि-फिरभी	लाड़न-प्यारकरना ।
युवति-जवानस्त्री	प्रतिज्ञा-वादा ।
सभ्य-चतुर	अभिमान-घमण्ड ।
कुचेष्टा-बद इरादा	कृतघ्नता-भलाई का न मानना ।
ह्रस्व-एकमात्रा का ह्रस्व होता है	न्यून-कम ।
दीर्घ-दो मात्राको दीर्घकहते हैं जैसे ऊपज	अधिक-जियादा ।
प्लुत-तीनमात्राकाप्लुतहोताहैजैसेऊ३पज	उच्चासन-बड़ादर्जा ।
अवसान-आखिर	कण्ठस्थ-जबानी ।
माननीय-बड़ाई के योग्य	अज्ञात गम्भीर जल-न जाना हुआ गहरा
अयोग्य-व्यवहार खोटा चलन	तिरस्कृत-बे इज़्ज़त ।
लोलुपता-आसक्ति	कुशोभित-बुरी सूरत ।
उपस्थेन्द्रिय-मलमूत्र त्यागने का स्थान	इति शेरसिंहविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामिदयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रका द्वितीय समुल्लासः समाप्तः ॥
अविनाशी-विनाश रहित	
व्यवस्था-फैसला	

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे तृतीयः समुल्लासः प्रारभ्यते।

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
आभूषण-गहना, ज़ेवर ।	सम्भव- जो होसके ।
मुख्यकर्म-वह कामजिसकी बड़ी आवश्यकता हो ।	दुष्टाचारी-खोटे चलन वाला ।
सुभूषित-सजा बजा ।	भृत्य-नौकर, चपरासी ।
	आलस्य-सुस्ती ।

शब्द	अर्थ
प्रमाद	गफ़लत ।
दण्डनीय	दंड देने योग्य ।
संक्षेप	थोड़ा, Short ।
स्वीकार करने योग्य	मानने योग्य ।
अज	जो पैदा नहो ।
सर्वाधार	सबका आश्रय ।
निरञ्जन	कलङ्क रहित ।
निर्विकार	एकरस ।
सकल	सब ।
जगत्	निरन्तर जो चलाजाता है ।
उत्पादक	उत्पन्न करने वाला ।
अनादि	जिस का आदि नहीं ।
विश्वम्भर	संसार को पालने वाला ।
प्राणायाम	योगके साधनों में से एकसाधन है जिस के करने से आत्मा शुद्ध हो जाता है जो लोग इसका साधन करेंगे उनके योगी होने और परमात्मा का प्रकाश देखने में कोई सन्देह नहीं ।
स्वाधीन	अपने आधीन ।
तीव्र	तेज ।
कठिन	मुश्किल ।
शीघ्र	जल्दी ।
परोपकार	लाभ पहुंचाना ।
अभाव	नाश
भेदकशक्ति	छिदने की ताक़त
आवृत्ति	अभ्यास ।
निमित्त	वास्ते ।
निवारणार्थ	दूर करने के लिये ।
व्यक्ति	शरीर ।
अत्यावश्यक	बहुत जरुरी ।
सत्कर्तव्य	अच्छा काम करने योग्य ।
लम्पटता	ऐय्याशी ॥
विस्तार	रिवाज फैलाना ।
प्रथम वय	बचपन ।
अनुकूल	मुवाफ़िक मर्जी ।

शब्द	अर्थ
अखण्डित	पूरा ।
शरीर स्थान	वह अध्याय जिसमें शरीर का वरणन हो ।
निर्दोष	दोष रहित ।
वेग	शीघ्र जल्दी ।
वाह्य	बाहर
अनुष्ठान	अभ्यास ।
अधोगति	नीचे गिरना ।
अत्यन्तकामातुरता	*** प्रसंगकी प्रबल इच्छा
निष्कामना	इच्छा का न होना ।
सारथि	कूंचवान ।
निग्रह	रोकना ।
सिद्धि	फलकी प्राप्ति ।
अनुरोध	रोक ।
अनध्याय विषयक	पाठशाला ।
सम्बन्धि	छुट्टी ।
स्वाध्याय	पढ़ना पढ़ाना ।
नम्र	झुकना ।
उपदेष्टा	उपदेशक ।
सुरक्षित	भलेप्रकार बचायाहुवा ।
प्रतिष्ठा	इज्ज़त ।
कृतोपनयन	जिसका जनेऊ हो चुका है ।
वीर्यस्खलित	वीर्य का गिरना ।
अनिन्दित	निन्दायोग्य ।
निष्काम पुरुष	इच्छा रहित ।
चेष्टा	इरादा ।
अपमान	बेइज्ज़ती ।
इतर	और ।
आज्ञादाता	इजाज़त देने वाला ।
यथावत् परीक्षित	ठीक परीक्षा कियाहुवा
भिक्षा वृत्ति	मांगकर खाना ।
सृष्टिक्रमानुकूल	कानून कुदरत के मुवाफ़िक़ ।
प्रमाण	दलील संस्कृत न्याय में प्रमाण आठ प्रकारके होते हैं । १-प्रत्यक्ष इन्द्रियों

शब्द अर्थ

का विषय के साथ। व्यवधान रहित जो सम्बन्ध उस करके उत्पन्न हुवा ज्ञान प्रत्यक्ष कहाता है।

२ अनुमान-कयास अर्थात् कारण को देख कर कार्य को जानना, १ कार्य्य को देख कर कारण को जानना २ इत्यादि॥

३ उपमान-प्रसिद्ध साधर्म्य से साध्य अर्थात् प्रत्यक्ष तुल्य धर्म्म से सिद्ध करने योग्य ज्ञान की सिद्धि करने का साधन उपमान कहाता है।

४-शब्द,, जो सत्यवादी परोपकारी जितेन्द्रिय पुरुष हैं जिनको आप्त भी कहते हैं जो ऐसे पुरुष तथापूर्ण आप्त परमात्मा के उपदेश वेदहैं उन्हींको शब्द प्रमाण मानो।

५-ऐतिह्य,, जो इतिह अर्थात् इस प्रकारका था उसने यह किया अर्थात् किसीके जीवन चरित्र का नाम है

६-अर्थापत्ति-जैसे किसीने किसी से कहा कि कारण से कार्य्य की उत्पत्ति होती है उससे विनाकहे यह दूसरी बात सिद्ध होती है कि विना कारण के कार्य्य नहीं होसक्ता।

७ "सम्भव" जो सृष्टि क्रमके अनूकूलहोवही सम्भव है जैसे कोई कहे कि माता पिताके विनाही सन्तानोपत्ति हुई किसी ने मुर्दोंको ज़िन्दा किया ईश्वरने अवतार लिया इत्यादि वातें सृष्टिक्रमके विरुद्ध होनेसे सम्भव नहीं होसक्तीं॥

८ अभाव-अदम मौजूदगी।

साधर्म्य-जिसका धर्म्म एक हो।

वैधर्म्य-भिन्न धर्म्म।

तत्वज्ञान-सूक्ष्म ज्ञान।

१ २ ३ ४

पदार्थ-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य,

५ ६

विशेष समवाय

शब्द अर्थ

द्रव्य-जिसमें क्रिया गुण और केवल गु भी रहे उसको द्रव्य कहते हैं।

लक्षण-हद तारीफ़।

लक्ष्य-जिसका लक्षण किया जावे।

द्रवी भूत-बहने वाला।

पर-इससे यह परे है उसकोपर कहते हैं।

अपर-उससे यह उरे है वह अपर।

युगपत-एकवार।

विलम्ब-देर।

शीघ्र-जल्दी।

प्रयोग-सम्बन्ध।

विकार-बीमारी

संख्या-गिन्ती।

परिमाण-बोझ।

पृथक्त्व-एक दूसरे से अलग होना॥

संयोग-एक दूसरे से मिलना।

विभाग-एक दूसरे से मिले हुवेके अनेक टुकड़े होना।

परत्व-दूर।

अपरत्व-समीप।

गुरुत्व-भारीपन।

द्रवत्व-पतलापन।

संस्कार-दूसरेकेयोग से वासना का होना।

उत्क्षेपणा-ऊपर को फेंकना।

अवक्षेपण-नीचे को फेंकना।

आकुञ्चन-सुकड़ना।

प्रसारण-फैलना।

सामान्य-आम।

विशेष-खसूसियत।

समवाय-नित्य सम्बन्धका नाम समवाय है

अभाव-चार प्रकार का है१प्रागभाव जो पहिले नहीं था।

प्रध्वंसाभाव-जो होकर न रहे।

अन्योन्याभाव-३परस्पर अभावको कहते हैं। जैसे गाय में घोड़ेका और घोड़े में गाय का अभाव है।

शब्द	अर्थ

अत्यन्ताभाव-जो न पहिले था न अब है न आगे को होगा जैसे आकाश के फूल
अभाव-अदम ।
यथार्थ-हू बहू ।
नित्य-नाश रहित ।
अनित्य-नाशमान ।
व्याप्ति-जो सिद्ध करने योग्य और जिससे सिद्ध किया जाय उन दोनों अथवा एक साधन मात्र का निश्चित धर्मका सहचार है उस को व्याप्ति कहते हैं जिस प्रकार धूम और अग्नि का सहचार है ।
स्थान-जगह ।
उच्चारण-Pronownce
तदन्तर-इस के बाद ।
पदच्छेद-पदों को अलग २ करना ।
समास-शब्दों का मिलना ।
धातु-मसदर ।
दृढ बोध-पूरी समझ ।
कर्म-जो किया जाय वह कर्म है ।
उपसर्ग-धातु के पहिले कोई अक्षर बढ़ाकर उसके अर्थ बदलदे उस अक्षर का नाम उपसर्ग है ।
अपवाद सूत्र-ज़ातह मतरुकः ।
प्रवृत्ति-अमल ।
अखिल-बेशुमार ।
प्रतिपादित-ज़ाहिर, साबित ।
कुग्रंथ-जिसके पढ़ने से अल्प लाभ हो जिसका प्रमाण न माना जाता हो ।
सहजता-आसानी से ।
महान विषय-बड़ा विषय ।
आशय-मतलब।
सुगम-आसान ।
क्षुद्राशय--तंग ख्याल ।
अल्प लाभ-कम फ़ायदा ।
आर्ष ग्रंथ-ऋषिकृत पुस्तकें ।

शब्द	अर्थ

सार्थक-बामानी ।
अल्प बुद्धि प्रकल्पित-थोड़ी समझ वाले की बनाई हुई ।
दुष्ट व्यसन-खोटी आदत ।
अन्वय-बामुहावरे मानी ।
व्याख्या सहित-मये तफ़सील ।
बीजगणित-जबर मुक़ाबला ।
भूगोल-जुग्राफ़िया ज़मीन ।
विधायक-बयान करने वाले ।
कृत कृत्य-फ़ारिगुल तहसील ।
पक्षपात-बेजा तरफ़दारी ।
निर्भ्रान्त-भ्रान्ति रहित ।
परित्याग-त्याग करने के योग्य ।
प्रक्षिप्त श्लोक-वह श्लोक जो स्वार्थियों ने मिला दिये हों ।
परस्पर विरोध-आपस में मुख़ालफ़त ।
उपादान कारण-जैसे मृतिका घटका उपादान कारण अर्थात् इल्लत माद्दी ।
निमित्त कारण-जैसे कुम्हार घट का निमित्त कारण है इसको निमित्त कारण या इल्लत फायली कहते हैं ।
विघ्न-रोक, हर्ज ।
प्रभाव-ज़ोर, रिवाज ।
देवासुर संग्राम-विद्वान् और राक्षसों की लड़ाई ।
शिल्प विद्या-इल्म इमारत ।
धन्यवादार्ह-धन्यवाद के योग्य ।
कोष अक्षय-लाज़वाल ख़ज़ाना ।
व्यय-ख़र्च ।
दायभागी-हिस्सेदार ।
समावर्त्तन-मवासलत ।

इतिशेरसिंहविरचितेश्रीमद्यार्तवरस्वामिदयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे तृतीयः समुल्लासः समाप्तः ।

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे चतुर्थः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द — अर्थ

स्वधर्म्म-अपना धर्म्म ।
वर्णानुकूल-कौम के मुवाफिक ।
अनुक्रमपूर्वक-बाकायदे, हस्ब दस्तूर ।
परोक्ष-छिपाहुवा, गायब ।
प्रत्यक्ष-मौजूद ।
प्रशंसा-तारीफ़ ।
विलक्षण-अजब, उमदा ।
प्रायः-अक्सर ।
तीक्ष्ण-तेज ।
श्री-लक्ष्मी, दौलत ।
समृद्ध-ऋद्धि वाला ।
निम्नि लिखित-नीचेलिखाहुवा ।
विमुख-फिराहुआ ।
प्रविष्ट-दाखिल ।
कुत्सित-खोटा ।
अयोग्य-ना काबिल ।
गर्भाशय-रहम ।
प्रतिमास-माहवारी ।
पूर्वोक्त-पहिले कहाहुवा ।
असदृश-ना बराबर ।
प्रसन्नता-रजामन्दी ।
अप्रसन्नता-नाराजगी ।
कीर्त्ति-नामवरी ।
विनय-आजिज़ी ।
बाल्यावस्था-बचपन ।
अतिशय शोभा युक्त-निहायतही खूबसूरत ।
मंगलकारी-आनन्द देनेवाला ।
प्रतिष्ठा-इज्जत ।
क्रमशः-दर्जे बदर्जे ।
खण्डन-तरदीद ।
आढ्य-मालदार ।
आवश्यक-निहायत जरुरी ।
[illegible]-बाजू ।
[illegible] जांघ ।
[illegible]-जिकर ।

कटि वद्ध-कमर बस्ता ।
अधो-नीचे ।
बन्ध्या स्त्री-बांझ औरत ।
आकृति-सूरत ।
निकृष्ट-नीच ।
कर्त्तव्य-करने के योग्य ।
प्रवृत्त-मशगूल, लगा रहना ।
उपयोग-काम में लाना ।
निश्चित विजय-यकीनी जीत ।
युवावस्था-जवानी ।
प्रतिबिम्ब-अक्स ।
प्रतिकृति-तस्वीर को कहते हैं ।
अभिप्राय-मतलब ।
विदित-ज़ाहिर ।
समक्ष-सामने, रूबरू ।
अपूर्व-उत्तम ।
स्तन-छाती ।
स्रवत-जारी ।
ऋतुगामी-वह पुरुष जो हैजकेबादअपनी स्त्री से भोग करे ।
सौभाग्य-खुश नसीबी ।
ऐश्वर्य्य-हकूमत, अरूज ।
शोकातुर-मग़मूम, रंजीदह ।
ग्रहण करे-कबूल करे ।
प्रशंसक-तारीफ़ करने वाला ।
निन्दा-हिजो ।
स्तुति-तारीफ़ ।
सायम्-शाम ।
प्रातः-सुबह ।
हुतद्रव्य-होम की हुई चीजें ।
समुचित-बहुतमुनासिब ।
स्वस्थ-मजबूत ।
पाक शालास्थ वायु-रसोई के मकान की वायु ।
अदृष्ट-छिपाहुवा, जो दिखाई नदे ।

शब्द	अर्थ

प्रत्युपकार-बदला ।
शुश्रूषा-सेवा, खिदमत ।
कृतज्ञता-शुकरगुजारी ।
श्वासस्पर्श-श्वासके साथ मिलना ।
सन्देह निवृत्ति-संदेह का दूर होना ।
दृढनिश्चय-पक्का ऐत्काद ।
आवश्यक कार्य्य-जरूरी काम ।
दाता-देने वाला ।
गृहीता-लेनेवाला ।
विश्वास-ऐतबार ।
संचय-इकट्ठा ।
दुस्तर-जिसका पार करना कठिन हो ।
अक्षय धन-लाजवालदौलत ।
व्याधियुक्त-रोग में फसा हुवा ।
अल्पायु-थोड़ी उमर ।
अध्यापक-पढ़ाने वाला पुरुष ।
अध्यापिका-पढ़ाने वाली स्त्री ।
[illegible]चना ।
[illegible]व्य-करने और न करने योग्य काम ।
प्रयुक्त-लगाना ।
सम्मति--राय ।

शब्द	अर्थ

कलह-लड़ाई ।
परिश्रमी-मेहन्ती ।
पाकविद्या में निपुण-भोजन बनाने में होशियार ।
दुर्गुण-खोटे वस्फ ।
दूषित करने वाला-ऐबलगाने वाला ।
समयान्तर-मुख्तलिफ औकात ।
भद्रकुल-शरीफ खानदान ।
गर्भपातनादि-हमल गिराना वगैरह ।
उपद्रव-फ़िसाद, झगड़ा ।
स्वत्व-मिलकियत ।
आपत्काल-मुसीबत का वक्त ।
द्रोह-मुखालफत ।
कपोल कल्पित-बनावटी ।
सर्वमान्य-सबका मानाहुवा ।
पुष्कलजीविका-बहुत आमदनी ।
धुरन्धर-भारवाहक, बोझा उठानेवाला
भीरू-डरपोक ।

इति शेरसिंहविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामिदयानन्दनिर्मित सत्यार्थप्रकाशकोषे चतुर्थः समुल्लासः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोष पञ्चमः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द	अर्थ

अनुक्रम-तर्तीबवार ।
विधान-तरीक़ ।
निश्चितात्मा-टिकी हुई तबियत वाला ।
श्वेत केश-सफ़ेद बाल ।
त्वचा-शरीर का चमड़ा
अरण्य-वन, जंगल
निर्वाह-गुज़ारा
दमनशील-वह पुरुष जो अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू रखता हो
स्वकीय पदार्थ-अपनी चीजें

शब्द	अर्थ

शान्त-ब आराम खातिर
विरक्त-आज़ाद
वेदवित-वेद का जानने वाला
बाल बुद्धि-अक़िल तिफ़्लाना
कृतार्थ-वह पुरुष जिसको अभ्यास करने की ज़रूरत न हो
शुद्धान्तःकरण-साफ़ दिल
पृथक-अलेहदा, बरी
ब्रह्मवित-ब्रह्मका जानने वाला
प्रकाशमय-रोशन

शब्द — अर्थ

कल्याणार्थ-आराम के वास्ते
उपदेश-नसीहत
अधर्माचरण-बदचलनी
राग-दोस्ती
द्वेष-दुशमनी
सामर्थ्य-ताक़त, शक्ति
दूषित-ऐबदार
भूषित-सजाया हुआ
शोधक-साफ़ करनेवाला
भस्मीभूत-राख
व्याप्ति-व्यापक होना
निःस्पृह-बे आर्जू
निरन्तरसुख-सदा रहनेवाला सुख
धृति-इस्तक़लाल
सहनशील-बुर्द बार
प्रवृत्त-मायल
विश्वासघात-मोतबर होकर मारना
मार्जन-मलना
इन्द्रियनिग्रह-इन्द्रियों को रोकना
विपरीत-उलटा
हर्ष-खुशी
शोक-रंज
द्वन्द्व-परस्पर विरुद्ध जैसे जाड़ा गर्मी सुख दुःख
अधिकार-अख़तियार
अन्य-दूसरा, और

शब्द — अर्थ

अक्षय आनन्द-वह आनन्द जिसका क नाश न हो
आवश्यका-ज़रूरत
गृहकृत्य-घर के काम
विषयाशक्ति-लज्ज़तों में फसना
विलक्षण-अजीब
प्रत्युपकार-बदला
व्यर्थ-बे फ़ायदा
एकत्र-एक जगह
स्थानान्तर-दूसरी जगह
स्वर्णदान-सोने का दान
अभिमान-ग़रूर
अयुक्त-ना मुनासिब
पेटार्थी-पेट का बन्दा
वीर्य्यसंरक्षण-वीर्य्य की रक्षा
प्रत्युत-लेकिन
निःसंदेह-बेशक
शंका समाधान-संदेहों का द्र्व
प्रशंसा-तारीफ़
मिथ्या-झूठा
प्रपंच-जहान
धर्मात्मा-नेकआदमी

इति शेरसिंहविरचितेश्रीमद्यतिवरस्वामि दयानन्दनिर्मित सत्यार्थप्रकाशकोषे पञ्चमः समुल्लासःसमाप्तः ॥ ५ ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे षष्ठः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द — अर्थ

कथन-बयान
यावत-कमाहक़्क़ुहू
मग्र-कुल
तन्त्र्य-आज़ादी, खुद मुख्तारी,
ाय-मजमूआ, गिरोह

शब्द — अर्थ

प्रकाशमान-मशहूर
प्रशंसनीय-तारीफ़ के लायक
पराजय-फ़ते किया गया, जीता गया
विजय-जीतना
परतन्त्र-पराधीन

शब्द	अर्थ
सभेश	सभा का स्वामी
विद्युत	बिजुली
निरोधक	रोकने वाला
बन्धनकर्ता	कैद करने वाला
दण्ड	सज़ा
शासनकर्त्ता	हाकिम
छिन्नभिन्न	तितर बितर
मोह को प्राप्त न होके	ग़ाफिल न होकर
तेजोमय	शानदार
आसक्त	फंसाहुआ, लुभायाहुआ
स्थापित	क़ायम
प्रवीण	कामिल, पूरा
मुख्य सेनापति	कमानडुंचीफ़
मुख्य न्यायाधीश	अदालती
मुख्य राज्याधिकारी	वज़ीर
न्यून से न्यून	कम से कम
उल्लंघन	गुज़रना
नियत समय	वक्त मुक़र्रिरा
मृगया	शिकार खेलना
बलात्कार	ज़बरदस्ती
द्रोह	निफ़ाक़
ईर्षा	हसद
असूया	ऐब ढूंढ़ना
अर्थ दूषण	बेजा सर्फ़
दुर्गुण	ऐब
कामज	काम से उत्पन्न हुवा
राज सभासद्	दर्बारी अहलकार
मन्त्री	वज़ीर
सुपरीक्षित	भलेप्रकार आज़माया हुआ
सहाय के विना	बेइमदाद
विशेष	ज़्यादह
सुगम कर्म	सहल काम
निर्भर रखना	मुनहसिर करना
शान्तिस्थापन	अमन क़ायम करना
नियुक्त	मुक़र्रर
भृत्य	नौकर, ख़िदमतगार

शब्द	अर्थ
हाव	तरीक़ा, तौर
भाव	रविश
विशारद	चतुर
अत्यन्त उत्साह प्रतियुक्त	बहुत शोक और उमंग से मिलाहुआ
दूत	क़ासिद
अमात्य	मन्त्री
दण्डाधिकार	सज़ा देने का अख़तियार
दण्डमें विनय करना	सज़ा में नर्मी वर्त्तना
विरोधी राजा	उलटा राजा
धनुर्धारी	धनुष् को धारण करनेवाला
प्रकूट	शहर पनाह
दुर्ग	क़िला
अगमनीय	वह स्त्री जिससे भोग करना अनुचित (नाजायज़) हो
वार्षिकर	सालाना महसूल
आप्त पुरुषों के द्वारा	सच्चे आदमियों के ज़रिये
विविधप्रकार	तरह तरह की
अध्यक्ष	सुप्रिंटेंडेन्ट
आह्वान	ज़ोर से बुलावे
निवृत्त हो	इनकार न करे, हटे नहीं,
कारागार	जेलख़ाना
सेनास्थजन	फ़ौजी आदमी
अलब्ध	जो हासिल नहीं हुआ
असमर्थ	ग़रीब लाचार
ध्यानावस्थ	ध्यान में बैठकर
अर्थसंग्रह	धनका इकट्ठा करना
कर्षित	दुबला
गुप्तता	पोशीदगी से
भूगोलका वर्त्तमान जनाया करे	दुनिया हालात की ख़बर दियाकरें
सर्वस्वहरण	सारा माल ज़ब्त करना
कर	महसूल
तीक्ष्णकोमल	सख्त नरम

शब्द अर्थ

प्रमादरहित-होशियार
निरन्तर-हमेशा
विपरीत-उलटा
उपस्थित-मौजूद
राज व्यवस्था-इन्तज़ाम रियासत
विरोध भावना-निफ़ाक़
अनुमति-इत्तफ़ाक़
आश्रय लेना-कुमक लेना
उन्नतिशील-पुरजोश
निःशंक-बेख़ौफ़
उदासीन-नफ़रत करनेवाला
प्रबन्ध-इन्तज़ाम
किसी निमित्त को प्रसिद्ध करके-किसी सबब को ज़ाहिर करके
दृढस्तम्भ-मज़बूतखम्भ
विकार-खोट
समभूमि-हमवार ज़मीन
पदाति-पैदल
व्यूह-सफ़बन्दी
प्रतिज्ञादि-अहद वग़ैरह
वंशस्थ-खानदान में
योगक्षेम-बेइज्ज़ती
कृतज्ञ-शुक्रगुज़ार
अनुरागी-बा मोहब्बत
स्थिरारम्भी-धैर्यवान
व्यायामशाला-कसरत करने की जगह
अन्तःपुर-रानियों का महल
...द्ध-अक़िल
...-ज़ोर
...क्रम-हिम्मत
...-बढ़ानेवाला
...नाशक-बीमारियोंको दूर करनेवाला

शब्द अर्थ

देशाचार-मुल्की रसम
निर्णय-तहक़ीक़
प्रतिदिन-हररोज़
विवादस्पदमार्ग-लड़ाईहोने का मार्ग
निक्षेप-अमानत
दायभाग-हिस्सेदारी
सुहृद्-मित्र, दोस्त
साक्षी-गवाही
सभासद्-मेम्बर
न्यायाधीश-अदालती, मुंसिफ़
व्यर्थ-फ़ज़ूल
वादी-मुद्दई
प्रतिवादी-मुद्दाइले
शान्ति पूर्वक-इत्मिनान के साथ
प्रकार-तरह
वाणी-सखुन, बात
सत्कार-इज्ज़त
तिरस्कार-बेइज्ज़ती
कारण-सबब
मिथ्याभाषण-झूट बोलना
भिन्न स्थान-और ठिकाना
वक्ष्यमाण-जो कहे जायंगे
न्यायासन-मसनद अदालत
साधारण मनुष्य-आम आदमी
साहसिक-ज़ालिम
प्रसिद्ध-बासबूत
अप्रसिद्ध-बेसबूत
दण्डघ्न-बाग़ी
दृष्टान्त-मिसाल
गुप्त-पोशीदा, छिपाहुआ

इतिशेरसिंहविरचिते,श्रीमद्यतिवरस्वामि
दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे
षष्ठः समुल्लासःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे सप्तमः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

ब्द	अर्थ
ुव्यगुण	उत्तमगुण
पासनीय	उपासना करने के योग्य
ान्यत्र	और जगह
ेद्यमान	मौजूद
ानातन	क़दीम, पुराना
ागत् कारण	दुनियां का सबब
ेभाग	तक़सीम
ादृश	बराबर
ेर्माता	रचनेवाला
ारक	तरग़ीब देनेवाला
ेर्भ्रम	बेशुबा
ात्यक्ष सृष्टि	जाहिर दुनियां
्छित विषय	मतलूबा चीज़
ार्वान्तर्य्यामी	सबकेभीतरकी जाननेवाला
ार्वज्ञ	सब कुछ जाननेवाला
ार्वनेता	मालिक कुल
ाष्टा	पैदा करने वाला
लय	कार्य्यरूप जगत् के नाश होने को प्रलय कहते हैं
ाप्राप्त देशमें कर्त्ता की क्रिया का असम्भव	नहीं प्राप्त जो देश उसमें करने वाले की क्रिया (कर्म) नामुमकिन है अर्थात् करनेवाला अपनाकर्म वहांही करसक्ता है जहां वह मौजूद हो
ाद	फ़रक़
ारिमित	हद्द वाली
ाुधा	भूख
ाृषा	प्यास
ायोग	मेल
ाूक्ष्म	बारीक
थूलाकार	बड़ा शरीर
ारभिमानता	अभिमान रहित
ादयानिधे	हे दया के समुद्र

शब्द	अर्थ
धर्म्मपथ	धर्म्म का मार्ग
हनन	मारडालना
प्रेरित	राग़िब
दण्डनीय	क़ाबिल जुर्माना
अविद्या	अज्ञान
अन्धकार	अन्धेरा
प्राणी	जानदार
अप्राणी	बेजान
पिपीलिका	च्यूंटी
हानिकारक	नुक्सान पहुंचानेवाले
आत्मस्थ	आत्मामें ठहरकर
समीपस्थ	नज़दीक होना
समर्पित करदेवे	सौंप देवे
विवेचन	तमीज़
निष्क्रिय	क्रिया रहित
निर्गुण	गुण रहित
मिश्र फलदायक कर्म	ऐसे कर्म जिनका फल बुराई और भलाई से मिला हो
उपादान कारण	इल्लत माद्दी
प्रकरण	फसल बाब
प्रधान	मुख्य
प्रकृति	स्वभाव, माद्दा
अवस्थान्तर	दूसरी सूरत
त्रिकालदर्शी	भूत (गुजरा हुआ) भविष्यत-(आने वाला) वर्तमान (हाल) तीनों कालों का जानने वाला
व्याप्यव्यापक सम्बन्ध	मुहीत व मुहात सम्बन्ध
आधार	सहारा
आधेय	सहारे से रहने वाला
सभ्य	सज्जन, साधु
महावाक्य	इसम आज़म
ब्रह्मस्थ	ब्रह्म के ध्यान में लौलीन

शब्द	अर्थ
सहचारी	साथी
अविरोधी	अनुकूल
प्रेमबद्ध	स्नेह में जकड़ा हुआ
निमग्न	डूबा हुआ
एक अवकाशस्थ	एक जगह
उपाधि	पर्दा, हजाब
वाच्यार्थ	मुख्य, अर्थ
लक्ष्यार्थ	दूसरा अर्थ जो बनसके
अनादि सान्त	आदि रहित अन्त सहित
चरितार्थ	शामिल होने वाला
स्वाश्रय	अपने आश्रय
परिछिन्न	अलेहदा
सीमा	हद्द
क्षणभंग	शीघ्र नाश होने वाला
अन्तःकरणस्थचिदाभास	अन्तःकरण में चेतन का साया
अनुत्पन्न	ग़ैर मौजूद
अमृत	मोक्ष
अद्वैतसिद्धि	वहदत का सबूत
सजातीय	अपनी जातिवाला
विजातीय	भिन्नजातिवाला
विशेषण	सिफ्त, तारीफ
व्यावृत्तिक	जुदा करने वाला
प्रवृत्तक	बाज़े करने वाला
प्रकाशक	जाहिर करने वाला
निषेध	दूर करना, रफ़े
प्रकृति	स्वभाव
दृश्य	दीदनी
अन्वय	जिसके होने से जो हो
व्यतिरेक	जिसके न होने से जो न हो
रागी	फंसा हुआ, आशिक़
ईक्षण	दर्शन
अपेक्षा	ज़रूरत
निर्भ्रमज्ञान	इल्म यक़ीनी
प्रतिपादन	बयान तफ़सील
परमेश्वरोक्त	परमेश्वर का ज्ञानवेद
स्पष्ट व्याख्या	जिसको सर्व साधारण लोग समझसकें
कार्य्योत्पत्ति	कार्य्य का पैदा होना
सुशिक्षा	बढ़िया तालीम
ध्यानावस्थ हो	परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हो
ज्ञान	जानना
निर्माण	करना, रचना, बनाना

इतिश्रीसिंहविरचितेश्रीमद्यतिवरस्वामिदयानन्दनिर्मित सत्यार्थप्रकाशकोषे सप्तमःसमुल्लासःसमाप्तः॥७॥

अथ सत्यार्थप्रकाश कोषे अष्टमः समुल्लासः प्रारभ्यते।

शब्द	अर्थ
विविध सृष्टि	तरह तरह की मख़लूक
अद्वितीय	लासानी
विद्यमान	ज़ाहिर
नाशरहित	अविनाशी
अतिरिक्त	अलाहिदा
निमित्त कारण	जिसके बनाने से जो बने बनाने से न बने
अनादिकारण	जिसके बिना कुछ न बने
अज	जिस का जन्म कभी न हो
सत्व	शुद्ध
रज	मध्यम
तम	जड़ता
प्रकृति	माद्दा
संघात	मिला हुआ गड्ड मड्ड
बुद्धि	अक़्ल
अहङ्कार	खुदी

शब्द	अर्थ
पञ्चतन्मात्रा	सूक्ष्म भूत अनासर ख़मसा लतीफ़ा
मन	दिल
पञ्चमहाभूत	अनासर कसीफ़ा
अविकारिणी	विकार रहित
प्रकरणस्थ वाक्य	कलाम बर महल
सार्थक	बामानी
चेतन मात्र	महज़रुह
साधारण	आम
परमाणु	जिसके टुकड़े न हो सकें संसार के बनाने की सामग्री
सामग्री	असबाब
वृक्षाकार	दरख्त की शकल
सङ्कल्पमात्र	महज़ख्याल
परिणाम	इन्तहावाला
अवस्थान्तरयुक्त	बदलने वाली हालत से मिला हुआ
साधक	साबित करने वाला
बाधक	बातिल करने वाला
तन्तु	रिश्ता
अद्भुत	अजीब
प्रभाव	ज़हूर
आवृत	पोशीदा
आच्छादित	ढका हुवा
प्रसिद्ध चिन्ह	अलामत
प्रलय	जगत् कानाश
सुषुप्ति	गाढ़निद्रा
एकार्थवाचक	हम मानी
परिवर्तन	तरमीम
भौतिकेन्द्रिय	हवासदुनयावी
खःपुष्प	आकाश का फूल
मृगतृष्णा	जो दूर से जल दिखाई दे समीप जाकर देखें तो रेत निकले
परमत्त	मद पोश, पागल
अन्तरिक्ष	जमी आसमान का बीच
विरोधी	विरोध करने वाला
इतरेतराभाव	एक में दूसरे का अभाव
भित्ति	दीवार
प्राकृत भाव वाले	जड़ पदार्थों के पूजने वाले
आग्राही	ज़िद्दी
मैथुनी	बाहम मिलकर औलाद पैदा करना
प्रवाहरूप	सिलसिले बन्दी
उपद्रव	झगड़ा
माननीय	क़ाबिल तसलीम
पादाक्रान्त	पांवके नीचे
दुर्दिन	खोटे दिन
आधार	सहारा
आकर्षण	कशिश
असंख्यात लोक	बेशुमार जगत्
परिधि	धुरी
प्रकाशक	ज़ाहिर करने वाला
काल अवयव	कालके टुकड़े
अज्ञ	नादान
गुरु	बड़ा
निष्प्रयोजन	हिकमत से ख़ाली
जड़ पदार्थ	बेहोश मख़लूक़ात
अल्प सामर्थ्य	कम ताक़त

इति शेरसिंह विरचिते श्रीमद्यतिवर स्वामिदयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे अष्टमः समुल्लास समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे नवमः समुल्लासः प्रारभ्यते

शब्द	अर्थ
यथार्थ ज्ञान	सच्चा इल्म
विपरीत बुद्धि	उलटी समझ

शब्द अर्थ

मिथ्याभाषण-झूठ बोलना
मुक्ति-छुटकारा नजात
वृद्ध-असीर क़ैद
निवृत्त-सबब
साधक-किसी हुनर या इबादत में दुःख उठाने वाला
वस्तुतः-फ़िलवाके
देह-जिस्म, शरीर
अन्तःकरण-चित्त, बुद्धि मन अहङ्कार की मिली हुई सूरत को कहते हैं
साक्षीमात्र-महज़ शाहद
संकल्प-नेक ख्याल
विकल्प-झूठा ख्याल
निश्चय-ऐतक़ाद
स्मरण-याद
दण्डनीय-सज़ावार
लिप्त-लिथड़ा हुआ
प्रतिबिम्ब-अक्स
अन्तःकारणोपाधि-छिपा हुआ अन्तकरणसे
निराकार-बेजिस्म, शरीर रहित
सर्वव्यापक-मुहीत कुल
गम्भीर-गहरा
स्वच्छ-साफ़
आभास-साया
चिदाभास-चेतन का साया
मिथ्याप्रलाप-फ़र्याद बेमानी
दर्पण—शीशा
स्वयम्-आपही
आवरण-पर्दा
जिज्ञासु-तालिब
[अ]न्तःकरणावछिन्न-अन्तःकरणसेछिपाहुवा
[क]ल्पना-फ़र्ज़
[हा]नि-नुक्सान
[ब]न-आदत
[...]क सम्बन्ध-ताल्लुक अनसरी

शब्द अर्थ

गोलक-मुक़ाम हवास
धनयुक्त-मालदार
निवृत्त होना-लौटना, वापस होना
अत्यन्तविच्छेद-इतफ़ाकुली.
अहोरात्रि-रात दिन
परिमित-महदूद
असीम सामर्थ्य-बेहद ताक़त
उच्छेद-काटना
अन्त-आख़िर
आगम-आमद
व्यय-ख़र्च
कटु-तल्ख़
मधु-मीठा
आय-आमदनी
प्राणी-प्राणवाला
श्रम-मेहनत
उपाय-इलाज
क्षुद्रधन-थोड़ाधन
पापाचरण-बेइमानी
धर्माचरण-ईमानदारी
निश्चय-यक़ीन
अस्थिपर्यन्त-हड्डीतक
पृथिवीमय-ख़ाक का बनाहुआ
पायु-मिक़द, गुदा
उपस्थ-लिङ्गेन्द्रिय
सूक्ष्म शरीर-जिस्मलतीफ़
भौतिक-ख़ाकी
स्वाभाविक-तबई, ज़ाती
विभू-व्यापक
यथावत्-सहायक
वैराग्य-नफ़रतदुनियां से
शम-तसकीन ख़ातिर
दम-इन्द्रियों का निरोध
उपरति-गोशा पकड़ना
तितिक्षा-सहन

शब्द	अर्थ
समाधान	ख़ातिर जमा
मुमुक्षु	तालिब नजात
प्रीति	मोहब्बत
अनुबन्ध	मददगार
अधिकारी	मुस्तहक़
प्रतिपाद्य	क़ाबिल बयान
प्रतिपादक	साबित करनेवाले
श्रवण	सुनना
निदिध्यासन	बग़ौर तसव्वुर करना
काम	इच्छा
अभिमान	ग़रूर
आकृति	शकल
स्वतःसिद्ध	ख़ुद ब ख़ुद
अमुक	फलां
कुपथ्य	बदपरहेज़ी
उन्मत्त	मदहोश
विवाद	मुक़दमा
उष्णकाल	मौसमगर्मी
अधर्मयुक्त	काफ़िर
वृद्धि	अफ़ज़ायश
क्षय	ज़वाल
छिद्र द्वारा	सुराख़ के रस्ते
प्रविष्ट	दाख़िल

शब्द	अर्थ
कामना	इच्छा
श्रेष्ठ	बढ़िया
मध्य	औसत
निकृष्ट	घटिया
अन्तर्भाव	गुम होजाना
पुष्कल	बहुत
आसक्त	लुभायाहुआ
गुणातीत	गुणों से न्यारा
मनकी वृत्ति	मनकी हरकत
निरोध	साकिन
आचार	नेक रवैया
अनाचार	इसके विरुद्ध
भक्ष्याभक्ष्य	खाने के योग्यऔर न खाने के योग्य ॥
विषय	मज़मून
द्रष्टा	देखने वाला
अति वृष्टि	बहुत ज़ियादा बारिश
अति ताप	बहुत गर्मी

इतिश्रेरासिंहविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामि दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे नवमः समुल्लासः समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे दशमः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द	अर्थ
अत्यंत कामातुरता	इफ़रात शहवत
निष्कामता	कम करना शहवत का
निरिच्छा	इच्छा रहित
हस्त	हाथ
पाद	पांव
आप्त ग्रन्थ	वह पुस्तक जिनको सुलहा (नेक लोगों) ने बनाया हो ॥
अपमान	ज़िल्लत
लक्षित	ज़ाहिर

शब्द	अर्थ
परम प्रमाण	सनद आला
शिखा	चोटी
उच्छिष्ट	झूठा खाना
प्रवृत्त	लगाहुवा
अभीष्ट	मतलूबा
सिद्धि	मुराद
विषयासक्त	लज्जतों में फंसाहुवा
अजितेन्द्रिय	दबाया हुवाइन्द्रियों से
युक्ताहार विहार	मुनासिब खुराक

शब्द	अर्थ
जिज्ञासु	तालिब इल्म
अधिक	ज़ियादा
कल्याण	आराम, नजात
आरोग्यता	तन्दुरुस्ती
पुरुषार्थ	ताक़त
दुष्टाचार	बदअमल, खोटा चलन
प्रत्युत्तर	दुबारा जवाब
निमंत्रण	नौता
कुलक्ष	धब्बा
धूर्त	मक्कार
अप्रचार	रिवाज न देना
भयंकर	भय (खौफ़) देने वाला
राक्षस	दुर्जन
लूम	भगाना
उपकारक	मददगार
बुद्धिवृद्धि	अफ़ज़ायश अक़िल
क्रमशः	सहज सहज
तंडुलादि	धान वग़ैरह
गोधूम	गेहूं
यथोचित	मुताबिक़
मिताहार	नपाहुवा खाना
प्रकृति से विरुद्ध	स्वभाव से विरुद्ध
विकार	नुक़सान
विहित	कही हुई, आयज़
घृणा	नफ़रत
पुत्रवधू	लड़के की बहू
संकुचित	शर्मिन्दा
पाकशाला	भोजन बनाने की जगह स्थान
स्वीकार	अख़्तियार
स्वस्त्री	अपनी औरत
न्याय दृष्टि	इन्साफ़ की नज़र
विदित	मालूम
गुणग्राहक	तालिब हुनर

इतिश्रीपरिव्राजकाचार्यविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामि दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे दशमः समुल्लासः समाप्तः ॥१०॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे एकादशः समुल्लासः प्रारभ्यते ।

शब्द	अर्थ
वेद मत के भिन्न	वेद मत के सिवा
अप्रवृत्ति	अदम रिवाज
अविद्यान्धकार	अन्धेरा जहालत का
विस्तृत	फैल जाना
एक सहस्र	एक हज़ार
मण्डन	सबूत
खण्डन	तरदीद
[illegible]योजन	मतलब
[illegible]नर्	दुबारा
[illegible]द् विवाद	फ़ज़ूल मुबाहसा
[illegible]पातरहित	बेतास्सुब
[illegible]न	पण्डित
[illegible]य	जो साधन करने के योग्य न हो
[illegible]	एक मज़हब
पूर्त्ति	इख़्तिताम
विधान	बयान
सुवर्ण भूमि	सोने की ज़मीन
विडालाक्ष	बिल्ली की आंख
मार्जार	बिलाव
आज्ञानुसार	हसबुल हुक्म
राज्य	रियासत
चक्रवर्ती राज्य	सलतनत रूएज़मीन
समर्थ पुरुष	इन्सान बाताक़त
अभाग्योदय	तुलू अदबार
पदार्थ विद्या	इल्मे कीमिया
क्रिया	अमल
निवारण	दूर करना
वारुणास्त्र	वह हथियार जिस के द्वारा

शब्द अर्थ

शत्रु के दल पर बारिश की जावे
निद्राष्ट-नींद में
पाण्डित्य-इलिमयत
भण्डार-ख़ज़ाना
भाषान्तर-और भाषा, ज़बान दीगर
संदेह-शुबा
निस्संदेह-यक़ीन, बेशक
शिशु मार चक्र-तारा मंडल
खगोल-जुग़राफ़िया आसमान
प्रबन्धबांधना-इन्तज़ाम करना
वशीभूत-क़ाबू किया गया
उपवन-दामन दरख्त ज़ार
भूदेव-खुदाई ज़मीन
द्रोह-मुख़ालफ़त
सूचना-इत्तला
यथेष्ट-हस्ब मन्शा
निर्मूल-मादूम
कुत्सित व्यवहार-खोटा अमल
अदण्ड्य-नाकाबिल सज़ा
कंटक-बख़ील
विमुख-फिराहुवा, नास्तिक
शुष्क-सूखा
त्रिकोण-मुसल्लस
चतुष्कोण-मुरब्बा
वर्त्तुलाकार-गोलाकार दायरा
गुप्तस्थान-छिपी हुई जगह
शाप-नफ़रीन
भगनी-बहिन
कुकर्म-खोटा काम
वमन-कै, उलटी
सामान्यवेश्या-आम रण्डी
पामर पन-कमीनापन
प्रक्षेप-एक दूसरे से लगावें, मिलाना
महाभयंकर-हौलनाक
प्रायः-अक्सर

शब्द अर्थ

शून्य-ख़ाली
अनुमान से-क़यास से
द्रविड़देशोत्पन्न-द्रविड़ मुल्क का पैदा हुवा
अत्यन्त पशुता-आला दर्जे की हैवानियत
स्वदेश भक्ति-हुब्बुल वतनी
अवसर-मौक़ा
विषयुक्तवस्तु-जहरीली चीज़
निरुत्साही-बेजोश
महान्त-महन्त इसी का बिगड़ाहुआ है
श्रीमान्-दौलत मन्द
प्रतीत होवे-दिखाई दे, मालूम होवे
अध्यास-एक चीज़ को उसके खिलाफ़ स-
मझना अध्यारूप या अध्यास कहलाता है
निराकरण-अपवादक कहलाता है
प्रपञ्च-अनासर ख़मसा
संस्कार-निशान
अवस्था-हालत
भान-ज़हूर
स्मृति-याद
साक्षात् अनुभव-फ़िलवाके ज़हूर
विवर्तवाद-कलाम ख्याली
अनिर्वचनीय-जो कहने में नहीं आवे
आधुनिक-ज़माने हाल के
वेदानुयाई-वेदों का माननेवाला
देवता-विद्वांसोहि देवा अर्थात् विद्वानों ही
को देवता कहते हैं
अद्यावधि-अबतक
शिल्पीलोग-कारीगर
यान-सवारी
संयोगजन्य वस्तु-मिलीहुई चीज़
क्षुद्रता-हिक़ारत
अश्रुपात-अश्क रेज़ी आंसू गिरना
जाठराग्नि-पेट की आग
प्रतिदिन-हररोज़
उच्चस्वर-ऊंची आवाज़

शब्द अर्थ

कोलाहल-शोर
अद्भुत-अजीब
आयुध-हथियार
ललाट-पेशानी
दासशब्दान्त-वह नाम जिसके अन्तमें दास शब्द लगा हो जैसे चरणदास, भगवान्दास
चरणारविन्द-वह कदम जो नीलोफ़र की सूरत का हो
अन्यायाचरण-अतवार नारास्त
गाथा युक्त-कहानी के साथ
मनवांछित-मनचाही
कुचेष्टा-बद इरादा
वाटिका-बागीचा
भाव-मेलान
आवाहन-बुलाना
विसर्जन-विदा
पंक्तियां-फ़िक़रे
स्थूललक्ष्य-निशाना मुजस्सिम
वेदविहित-वेद के मुताबिक
त्यक्तव्य-त्याग करने योग्य
पाषाण-पत्थर
प्रिय-प्यारा
वेश्यागमनादि-रंडीबाज़ी वगैरह
कलेवर-जिस्म
स्वयमेव-आप ही
दक्षिण देशस्थ-रहनेवाला मुल्क दक्षिणका
बुभुक्षु पाषाण-संग मक़नातीस
आकर्षण-कशिश
अग्रसरण-पेशक़दम, सामने
यथाशक्ति-जहांतक होसके
शरणागत-पनाह में आयाहुवा
...-फ़कीर
...ध्यान करनेवाला
...दिल चस्प
...ज्ञाम न ई

शब्द अर्थ

घुणाक्षरन्याय-घुन के काटने से कोई अक्षर सा बन जावे
किंकर-नौकर
परस्पर-आपसमें
जलाशय-तालाब
तेजोमय-रोशन
कूर्म-कछुवा
मनोवेग-मनकी चाल
अवकाश-गुंजायश, फ़ुरसत
अघटित-नामोज़ू
गुह्य-पोशीदा
रहस्ययुक्त-मुख़फ़ी छिपाहुवा
पुनरुक्त-दुबारा
मोहित-मफ्तूं
वत्स-बछड़ा
इष्टदेव-माबूद
सद्गति-अच्छी गति
पौरुषीय-बुज़ुर्ग
सूर्योदय-सूर्यनिकलना
सूर्यास्त-सूर्य छिपना
पारावार-हदवहिसाब
आशय-मज़मून
सचिव-दीवान
क्रूर-सख़्त
प्रतिनिधि-वकील, मुख़्तार
उदार-फ़राख़ हौसला
करुणा-रहम
समर्पित-फ़िदा कुर्बान
तिरस्कार-मलामत
अधमदाता-कमीना सख़ी
अकस्मात्-इत्फ़ाक़न
उपवास-व्रत
पूर्णाभिषेक-पूरा तिलक लगाते हैं
गुप्तेन्द्रिय-अन्दाम निहानी
अनुकरण-तक़लीद
अपशब्द-नावाजिब कलमा

शब्द अर्थ

तांशधन-सौवां हिस्सा धनका
हासंग्रही-बहुतजमा करनेवाले
मस्थान-मुलायम जगह
ास-दम जो भीतर को जाता है
श्वास-दम जो बाहर को आता है
ामीण-देहाती
हित कारक-बुरा चाहने वाला
ाति वहिष्-जात से बाहर
रियायवाची-मुतरादिफ़
पञ्च-मकर
पथ-राहनेक
ष्टिमार्ग-तरीका ताकत हासिल करने का
घटित-वाजिब
ासिक-माहवारी
ीघ्रता-जल्दी
ुरुषार्थी-हिम्मत वाला
र्वांश-हरहिस्सा
तद्देशस्थ संस्कृतविद्या-इसमुल्क की संस्कृत ज़बान
पकृतहोते-मददपाते
ाह्य-काबिल कबूल
श्चाताप-पीछे पछताना
सीम-बाहद् महदूद
वाभाविक-तबै
मित्तिक-सबब खार्जी

शब्द अर्थ

कृतहानि-कियेहुवे की हानि
विस्मय-आश्चर्य
प्रायश्चित्त-अपराधका बदला
अतिरिक्तहस्त-हाथ ख़ाली नहोना
अन्यमतस्थ-औरमज़हबवाले
परिणाम-आख़िर
विलम्ब-देर
निष्क्रिय-फेल की ताक़त नरखने वाला
काषाय वस्त्र-भगवें कपड़े
तत्पर-आमादा
अहर्निश-रातदिन
संकेत-इशारा
कृतार्थ-मतलब को पहुंचा हुआ
पाक्षिक पत्र-१५ दिनमें निकलनेवाला पत्र
पत्र सम्पादक-इडीटर अख़बार
उक्तपत्रसम्पादक-इडीटर अख़बारमज़कूर
आर्य्यावर्तदेशस्थ-आर्य्यावर्त केरहने वाले
राजवंशावली-राजाओं का शजरा ख़ान्दान
प्रधान-वज़ीर
महाप्रधान-वज़ीरआज़म
सुभाषा विभूषित-आरास्ता बज़बानफ़सीह

इतिशिरसिंहविरचितेश्रीमद्यतिवरस्वामि
दयानन्दनिर्मित सत्यार्थप्रकाशकोषे
एकादशःसमुल्लासःसमाप्तः॥११॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे द्वादशः समुल्लासः प्रारभ्यते।

ब्द अर्थ

ाल्मीकीय-वहग्रंथ जिसको वाल्मीकिजीने बनाया
थित-कहीहुई
वेस्तार पूर्वक-मुफ़स्सिल
नर्णयार्थ-बग़र्ज़ तहक़ीक़
अपूर्व लाभ-अजीब फ़ाइदा
अस्तु-होवे
परन्तु-लेकिन

शब्द अर्थ

अत्युद्युक्त-निहायत आमादा
गौण-मातहत
आलिंगन-हमआग़ोश
अदृष्ट-ग़ायब
अभाव-अदम
प्रकटता-ज़हूर
मोह-ग़फ़लत
द्रष्टा-देखने वाला

शब्द अर्थ

दृश्य-दीदा
विच्छिन्न-तितर बितर
नियमपूर्वक-बाकाइदे
निशाचर-रात को विचरने वाले
अगाध-बेथाह
परमत द्वेष-दूसरे मज़हब से अदावत
प्रध्वंस-तबाह, बरबाद
अपेक्षा-निस्बत
सकल-सब
वासना-आर्जू
निवृत्ति-दूर करना,
संज्ञा-नाम
प्रवृत्ति-अमल
भावना-ख्याल
क्षणिक-एक लहमे के
वेष-तरीक़
सुगत-अच्छी गति वाला
ज्ञेय-जानने योग्य
ज्ञान-जानना, दानिश, इल्म
अवलोकन-देखना
पुद्गल-परमाणु
सप्त भंगी-नेस्ती की सात किस्में
चरितार्थ-मालूम, मुरव्विज
विवेकी-तमीजदार
अनुवाद-ज़िकर
परोक्ष-गायब
अव्यवहित-व्यवधान रहित
रचना विशेषलिङ्ग-खलक़त वगैरा निशान
प्रति बन्धक-रोक
अन्योन्याश्रय-दौर तसलसुल
[illegible]नवस्थादोष-दौर तसलसुल
[illegible]मति-इत्फ़ाक़
[illegible]संकर-मिला हुआ
[illegible]य-बेफ़ल
[illegible]-बाफ़ेल
[illegible]बनावटी

शब्द अर्थ

सापेक्षता-निस्बत इज़ाफी
कारागृह-जेलखाना
न्यायव्यवस्था-कानून अदालत
स्वयं सिद्ध-खुदबखुद बना है
प्रमाणशून्य कथन-कलाम सबूत से खा[illegible]
समीक्षा-मुनाज़रा
सार-खुलासा
संग्रह-जमा
चतुष्पाद-चौपाया
अधिकरण-मकान, बरतन
समवाय सम्बन्ध-ताल्लुक ज़ाती
पूर्वोपार्जित-पहिले जन्म के इकट्ठे किये हु[illegible]
कर्म फल व्यवस्था-कानून इफ़आल के न[illegible]
तायज का
वीतराग-वह पुरुष जिस का राग (मोह-
ब्बत) जाता रहा हो
गणनीय-गिन्ती करने के योग्य
परमति-दूसरी मति वाला
रोमांच-रोम २ के खिलजाने को कहते हैं
आज्ञा भंग-हुकुम न मानना, अदूल हुकमी
शठ-बद आदमी, शरीर
नासिका छेदादि-नाककाटनावगैरा
अधमाधम-नीचोंकानीच
कटिबद्ध-कमरबस्ता
कलह-लड़ाई
अयुक्त-नामुनासिब
परमतद्वेष-मुखालिफ़ मजहब
नरक-दोज़ख
भवसागर-जगतरूपीसमुद्र
वेषधारी-बालिबासफिरका
असार-नापाक
ऊर्ध्व लोक-आलमेबाला
अधुर-लटकाहुआ
अशक्त-शक्तिरहित, बेज़ोर
युक्तिशून्य-दलील से (खाली)

ब्द् अर्थ
नुनासिक-वह अक्षर जो नासिका से न बोला जाता हो
नुनासिक-जिसकी आवाज़ नाक में हो
तधावन-मिसवाक करना
खप्रक्षालन- मुंहधोना
हवास-साथ रहना
त्यंत मूर्छित-निहायत बेहोश
द्वेग जनक सूत्र-उचाट पैदा करनेवालासूत्र
तिप्रिय-बहुत प्यारा
शब्द अर्थ
दीक्षा-गुरु मन्त्र
अध्ययन-पढ़ना
याथातथ्य-हूबहू
असम्भव ग्रसित-नामुमकिन से ग्रसाहुआ
आयु भर-सारी उमर तक

इतिशेरसिंहविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामि
दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे
द्वादशःसमुल्लासः समाप्तः ॥१२॥

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे त्रयोदशः समुल्लासः प्रारभ्यते।

शब्द अर्थ
विभाग-अलाहदा
सुस्वाद-खुशज़ायका
प्रभुता-खाविन्दी
दानकारक-दानिशदेनेवाला
मृत्युनिवारक-मौतकोदूरकरने वाला
अति कोपितहुवा-बहुतही खफाहुवा
अतिशोक-निहायतरंज
परपौत्र-पड़ौता
पत्नी-औरत
भांति-तरह
स्थिर-क़ायम
हिंसक-फाड़खानेवाले
ईर्षक-दुश्मनीरखनेवाला
रक्षार्थ-रखवाली के वास्ते
लघुशंका-पेशाब
मूत्रांश-पेशाबकाक़तरा
पक्षीवत्-परन्दकीतरह
इन्द्रजालीपुरुषवत् विदित होताहै—भानमतीसा मालूम होताहै
अनुग्रह-मेहर्बानी
उतावली-जल्दी
चांखा पिसान-उमदाआटा
आतुर-दुःखी
शब्द अर्थ
असाध्य-नामुमकिन
गर्भिणी-हामला
पक्षपात-बेजातरफ़दारी
भविष्यत-आनेवाला ज़माना
दुर्गन्धमय-मुताफ़्फ़न
अविधि-खिलाफ़ कायदा
विहान-सवेरा
निपट अभिलाषी-बिलकुल ख्वास्तगार
संदिग्ध-मुश्तबा
अध्यक्ष-मालिक, अदालती
निष्ठुरता-बेरहमी
अन्तर्ध्यान-ग़ायब
विश्राम दिन-आराम का दिन
रविवार-इतवार
सिन्धु-समुद्र
क्षतयोनि-जिस स्त्रीका पुरुषसे सहवास नहो
असभ्यता-जहालत, शरारत
विभव-जलाल
अभिषेक किपाहुआ-तिलक लगाया हु
निष्खोट-बे ऐब
अकारण-बेसबब
भयभीत डराहुआ
प्रमाण भूत-मुदल्लिल

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 723 (२४)
दयानन्द महिला म

शब्द	अर्थ
ज्ञ	सबकुछ जानने वाला
निर्भ्रम	भ्रम रहित
अर्द्धांगी	स्त्री को कहते हैं
अशुद्ध भूत	बदरूह
व्याधि	बीमारी
अधिकार	हुक्म
निरपराधी	बेकसूर
तारतम्य	बएतबारदर्जा
शमान्वित	शांत चित्त वाला
ज्ञान रहित	मूढ़ नादान
पूर्व	पहले
न्यूनता	कमी
प्रधान शिष्य	शागिर्द रसीद
धके योग्य	वाजिबुलकत्ल
कोष	सूली

शब्द	अर्थ
कथनाऽनुसार	हस्ब फर्मान
समीप	पास
वशी	मातहत
बयार	हवा आंधी
विक्षिप्त	मदहोश
पराक्रमी	हिम्मत वाला
प्रसव की पीड़	बच्चा होने की तकलीफ़
युगपत	एकही दफ़ा
द्रवित	पतलीचीज़
ग्रहीत	अख्तियार
पूर्वापर विरोध	इख़तलाफ़ अव्वल व आख़ीर

इतिश्रीसहविरचिते श्रीमद्यतिवरस्वामि दयानन्दनिर्मित सत्यार्थप्रकाशकोषे त्रयोदशः समुल्लासः समाप्तः ॥१३॥

अथ सत्यार्थप्रकाश कोषे चतुर्दशः समुल्लासः प्रारभ्यते।

शब्द	अर्थ
बलात्कार	ज़बर दस्ती
दुराग्रह	जिद, तास्सुब
अनिश्चित	बे एतबार
क्षण भंग	एक आन में तबाह होने वाला
मुख्य कर्म	मकसद आज़म
प्रथक्	अलाहदा
परस्पर	आपस में
निवेदन	ज़ाहिर
इष्ट	मरगूब
अनिष्ट	ना मरगूब
पक्षपाती	बेजा तरफ़दारी करने वाला
बाह्य	बाहर
ञ्चित	इकट्ठा किया हुआ
प्रयोजन	बे मतलब
ता	बअख्तियार खुद
	पैग़ाम
ान	लायक, विद्वान्

शब्द	अर्थ
पार्थिवीय शरीर	जिस्म ख़ाकी
आश्चर्य्य शक्ति	अजीब ताकत
प्रतिज्ञा	अहद
अल्पज्ञ	कम समझ
प्रसन्नता	मर्ज़ी
कर्मोच्छेद	कर्मों का काटना
लज्जित	शर्मिन्दा
जीवित	जिन्दा
कलंकित	बदनाम
प्रेरणा	तरग़ीब
यथेष्टाचार	हस्ब मर्ज़ी सलूक
प्रवृत्तक	रिवाज देने वाला
शपथ	क़सम
परिधि	महवर, धुरि
स्त्रैण्य	औरतों वाला
करुणामय	दयालु
अवश्य असमर्थ	ज़रूर कमज़ोर

शब्द	अर्थ
द्वितीय पक्ष	शक सानी
असत्य	झूठा, अधर्मी
वार्तालाप	बात चीत
बधिर	बहरा
लंकेश	लंका का स्वामी रावण
न्याय विद्या	मंतक का जानना
निर्मूल	बेबुनियाद
घृणित	नफ़रत देने वाला
अवसर	मौक़ा
न्यूनाधिक	कम बवेश
साहस	हौसला
गुह्यांग	छिपे हुये हिस्से बदन के
भूकम्प	जलज़ला
अपूर्ण	अधूरा
असावधानी	ग़फ़लत

अथ सत्यार्थप्रकाशकोषे स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाशः

शब्द	अर्थ
स्वमन्तव्य	अपना मानाहुवा या मानने के लायक
अमंतव्य	नमानाहुवा
सार्वजनक धर्म्म	वह धर्म्म जो सबके लिये पैदा कियागया
अविद्या युक्त जन	वह पुरुष जो अविद्या (जहालत) से युक्त हो
प्रकाशित	ज़ाहिर, चमकाया हुवा
आग्रही	ज़िद्दी हठी
मननशील	विचारवान
स्वात्मवत	अपने आत्मा के समान
श्रीमान्	धनवान्
महाशय	वह पुरुष जिसका बड़ा हौसला हो
सच्चिदानन्द	सत (बक़ा) चित (इल्म) आनन्द (खुशी)
निर्भ्रान्त	भ्रान्ति रहित

शब्द	अर्थ
स्वतःप्रमाण	वह पुस्तक जिसका सबूत मानने के लिये दूसरे की आवश्यक्ता न हो
परतःप्रमाण	जो अपने मज़मून के सबूत में दूसरे की आवश्यक्ता रखता हो
संयोग	सम और योग दो शब्दों से मिलकर बनाहै समके अर्थ भलेप्रकार योग (मिलाप)
नियत समय	वक़्त मुक़र्ररह
पर्यन्त	तक
विशेष व्याख्या	ज़ियादा शरह

इतिशेरसिंहविरचिते श्रीमद्यतिवर स्वामी दयानन्दनिर्मितसत्यार्थप्रकाशकोषे स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाशः समाप्तः।

शब्द	अर्थ
अभीष्ट	दिल ख्वाह
प्रथम पक्ष	शक अव्वल

इति सत्यार्थप्रकाशकोषः समाप्तः ॥

को एक

समाचार

का साथी ॥

जीवन में अनेक लौकिक और पार-
परन्तु ऐसे अपूर्व पुस्तक का अवलोकन
होगा अतएव हम हर्ष पूर्वक इस बीत
। हैं कि हमने ईश्वर की कृपासे अति श्रम
पुस्तक का विषय अति उत्तम और दर्शनीय
से भयभीत पुरुषों के लिये तो यह अमृत का
र्थात्या जिज्ञासु पुरुषों के लिये ऐसाही उप-
ुष्क जंगलों तथा अफ्रीका की रेतनी मरुभूमि में
भांति सलिलाप लब्धार्थ भटकते हुवे पुरुषों को मन्दाकिनी
गंगोत्रीका शीतल जल। हमको इसकी अधिक अस्तुति लिखना इसलिये
आवश्यक प्रतीत होती है कि इसके नाम मात्र से ही आप जान सकते हैं कि
यह कैसा उपयोगी ग्रन्थ है हम अपने मुख से अधिक और क्या कहें इस को
एक वार अवलोकन कर आप स्वयं ही जान लीजियेगा "आमोदे नैव क-
स्तूरी शपथेन विभाव्यते,, परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि प्रत्येक दुःख
से बचने और सुख की अभिलाषा रखने वाले पुरुष को तथा प्रत्येक परमार्थ
के यात्री को इसकी एक २ प्रति तो अवश्यही मंगाकर देखना उचित है जो
एक वार इसको अवलोकन कर लेगा हमे पूर्णाशा है की वह अपनी समस्त
आयु पर्य्यन्त इसको विलग न करेगा इसके दो एक पत्रोंको देखते २ ही मन
प्रमोद से आच्छादित होकर मानस विनोद रूपी समुद्र में निमग्न होजाता है
पुस्तक हाथ से रखने को जी नहीं चाहता वास्तव में वह पुरुष बड़ाही सौभाग्यवान्
है जिसकी निज (लाइब्रेरी) पुस्तकालय में यह अमूल्य रत्न उपस्थित है पुस्तक
बढ़िया सफ़ेद चिकने कागज़ पर बम्बई टाइप से छपा है इसपर भी मूल्य व-
लायती कपड़े की सुन्दर जिल्द सहित ॥।=) ही रक्खा है पुस्तकों की मांगपर
मांग चली आरही हैं शीघ्र मंगाइये नहीं दूसरे एडीशन तक टैहरना पड़ेगा।

पुस्तक मिलने का ठिकाना

शेरसिंह अध्यापक पाठशाला

कनखल जि० सहारनपुर